लिंग एवं परिवेश के आधार पर शिक्षा–स्नातक के विद्यार्थियों की व्यावसायिक परिपक्वता का अध्ययन

Dr. Ashok Kumar
Assistant Professor,
Vivekananda College of Education,
Johlaka Sohna, Gurugram

शोध सार

इस शोध पत्र में लिंग एवं परिवेश के आधार पर शिक्षा–स्नातक के विद्यार्थियों की व्यावसायिक परिपक्वता का अध्ययन करने हेतु शून्य परिकल्पनाओं "लिंग एवं परिवेश के आधार पर शिक्षा–स्नातक के विद्यार्थियों की व्यावसायिक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है" का निर्माण किया । प्रतिदर्श के लिए ,रूड़की जनपद–हरिद्वार के शिक्षा–स्नातक स्तर से **यादृच्छिक प्रतिचयन की लाटरी विधि** से विधार्थियों का चयन तथा प्रदत्त संकलन हेतु **मीना बुद्धि सागर राढौड़ और मधुलिका वर्मा** द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण **व्यावसायिक परिपक्वता मापनी** का प्रयोग किया गया और पाया गया लिंग एवं परिवेश के आधार पर शिक्षा–स्नातक के छात्रों की व्यावसायिक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

मुख्य शब्दावली: लिंग, परिवेश, शिक्षा–स्नातक, व्यावसायिक परिपक्वता।

प्रस्तावना

जब मानव समाज या समाज का कोई व्यक्ति अपने पैरों पर स्वयं चल पाने में सक्षम हो अपने निर्णय स्वयं लेने की क्षमता उस में आ जाये तो मनुष्य कई प्रकार से परिपक्व हो सकता है । जैसे– शारीरिक रूप से परिपक्व होना शारीरिक परिपक्वता है वैसे ही मानसिक परिपक्वता , आर्थिक परिपक्वता, वित्तीय परिपक्वता, सामाजिक परिपक्वता, सोचने की परिपक्वता और शैक्षिक परिपक्वता । मानव यदि शैक्षिक रूप से परिपक्व होता है तो भविष्य में उसे व्यवसाय सम्बन्धी समस्याओं से जूझना नहीं पड़ता एवं वह परिपक्व रोजगार परक व्यवसायों से परिपूर्ण रहता है व्यक्ति द्वारा सर्वप्रथम परिपक्वता अर्जित की जाती है तब कहीं जा कर वह एक सम्बद्ध कार्य किया जाता है । परिपक्वता ही व्यवसाय की प्रथम कुंजी कहलाती है जिसे हम व्यावसायिक परिपक्वता भी कह सकते हैं । व्यावसायिक परिपक्वता ही मानव जीवन का लक्ष्य है जिससे वह अपना एवं अपने परिवार जनो का पालन पोषण करता है । व्यवसायिक परिपक्वता वास्तव में व्यवसायिक शिक्षा द्वारा ही सुलभ है । व्यवसायिक शिक्षा द्वारा ही माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की दूरदर्शिता से सम्बंधित व्यापक संभावना और सुलभता के क्षेत्र वाली इस परियोजना के लिए सुनिश्चित करने की आवस्यकता है जिससे शिक्षा में गुणवत्ता प्रदान की जा सके । यहाँ हमें शिक्षा स्नातक छात्रों के विषय पर भी चर्चा करना अत्यंत जरूरी है इसलिए शिक्षा व्यवस्था में छात्रों के हर स्तर पर कौशल युक्त शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए जिससे की शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण हो सके । शिक्षा–स्नातक छात्रों के विषय पर भी चर्चा करना अत्यंत जरूरी है कयोंकि उन्हीं के हाथों में भारत का भाग्य और भविष्य निहित है इसलिए उन्हें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक रूप से परिपक्व करना शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण कार्य है क्योंकि एक परिपक्व व्यक्ति ही अपरिपक्व व्यक्ति या बालक को जीवन के सही ढांचे में ढाल सकता है ।

परिपक्वता से अभिप्राय व्यक्ति के चिंतन, निर्णय, कार्य करने का ढंग, जीवन के हर क्षेत्र, समस्याएं एवं अन्य व्यक्तियों के मतों को ग्रहण कर अपनी योग्यता व कुशलता के आधार पर निर्णय लेता है । शिक्षा स्नातक छात्रों को न केवल प्रमाण–पत्र अर्जन या केवल नाम एवं प्रतिष्ठा के लिए ही शिक्षा की अर्जन नहीं करना चाहिए वरन शिक्षा में गुणवत्ता एवं व्यवसायिक परिपक्वता में भी जागरूकता लेन के लिए इस सेवा क्षेत्र में कार्य करने के लिए उन्हें अग्रसर एवं तत्पर रहना होगा अन्यथा वह जीवन में सफलता का स्वाद नहीं ले सकेगा । छात्रों की व्यवसायिक परिपक्वता का महत्त्व शिक्षा एवं व्यवसाय की गुणवत्ता बनाये रखने में महत्व पूर्ण भूमिका रखता है ।

समस्या कथन

" लिंग एवं परिवेश के आधार पर शिक्षा–स्नातक के विद्यार्थियों की व्यावसायिक परिपक्वता का अध्ययन"।

शोध के उद्देश्य

- लिंग के आधार पर शिक्षा–स्नातक के छात्रों की परिपक्वता का अध्ययन करना।
- परिवेश के आधार पर शिक्षा–स्नातक के विद्यार्थियों की व्यावसायिक परिपक्वता का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

- लिंग के आधार पर शिक्षा–स्नातक के छात्रों की परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।
- परिवेश के आधार पर शिक्षा–स्नातक के विद्यार्थियों की व्यावसायिक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि– प्रस्तुत अध्ययन में शोध विधि के रूप में केवल सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श– प्रस्तुत अध्ययन के प्रतिदर्श के लिए ,रूड़की जनपद–हरिद्वार के शिक्षा–स्नातक स्तर से **यादृच्छिक प्रतिचयन की लाटरी विधि** से विधार्थियों के चयन किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षा–स्नातक के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक परिपक्वता को जानने के लिए **मीना बुद्धि सागर राढौड़ और मधुलिका वर्मा** द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण **व्यावसायिक परिपक्वता मापनी** का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा निम्लिखित शून्य परिकल्पनाओं का प्रयोग किया गया है। लिंग के आधार पर शिक्षा–स्नातक के छात्रों की व्यावसायिक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

तालिका संख्या–1

लिंग के आधार	कुल संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी सारणी मान	निर्णय
शिक्षा–स्नातक के छात्र	48	154.16	14.45	0.972 Difference significant at 5%	प्रेक्षितान्तर असार्थक।
शिक्षा–स्नातक के छात्राएं	52	156.65	10.73		

व्यावसायिक परिपक्वता मापनी पर लिंग के आधार शिक्षा– स्नातक के छात्रों की संख्या 48 एवं छात्राओं संख्या 52 उनकी व्यावसायिक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 154.16 व 156.65 प्रमाणिक विचलनक्रमशः 14.45 व 10.73 टी सारणी मान 0.972 जो की सार्थकतास्तर 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 से कम है प्रेक्षितान्तर सार्थक है शून्य परिकल्पना स्वीकृत ।

परिवेश के आधार पर शिक्षा–स्नातक के विद्यार्थीयों की व्यावसायिक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या–2

परिवेश	कुल संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी सारणी मान	निर्णय
शिक्षा–स्नातक के ग्रामीण विद्यार्थी	46	153.91	13.80	01.11 Difference significant at 5%	प्रेक्षितान्तर असार्थक।
शिक्षा–स्नातक के शहरी विद्यार्थी	54	156.77	11.54		

परिवेश के आधार पर व्यावसायिक परिपक्वता मापनी में शिक्षा– स्नातक के छात्रों की सख्या 46 एवं छात्राओं संख्या 54 उनकी व्यावसायिक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 153.91 व 156.77 प्रमाणिक विचलन क्रमशः 13.80 व 11. 54 टी सारणी मान 01.11 जो कि सार्थकता स्तर 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 से कम है प्रेक्षितान्तर सार्थक नहीं है शून्य परिकल्पना स्वीकृत ।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रुप में यह कहा जा सकता है कि लिंग एवं परिवेश के आधार पर शिक्षा–स्नातक के छात्रों की व्यावसायिक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सन्दर्भ

- Mangal S.K. (2008). Statistics in psychology and Education prentice, Hall of India private limited.
- Sharma R.A. (2008). Fundamentals of Educational Psychology. R. Lal Book Depot. (Merut)
- Aggarwal Y.P (2000) "Statistical method concept, application and computations"; sterling publishers pvt.ltd New Delhi.
- Sharma R.A. (2005) Educational Research and Statistics.
- Mangal S.K (II edition) Methodology of Educational Research.
- डॉ वालिया जे. एस. (2011) अधिगम कर्ता, अधिगम एवं संज्ञान अह्म वाल पब्लिशर्ज (पजाब)
- डॉ. मंगल एस. के. मंगल उमा (2010) विद्यार्थी अधिगम एवं संज्ञान टंडन पब्लिकेशन (लुधियाना)
- पाण्डेय, डा. के. पी. ;2006 शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
- मैरी, शॉ, (2006), सामाजिक, आर्थिक स्थिति का संकेत, माइकल आक्स, संपादित, सन फ्रांसिसकों, पृ. 78–80.
- नायक, सुधा, (2007); भारत की समाजिक सांस्कृतिक विशेषताएँ, विकास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नागपुर, पृ. 35–38.
- आहुजा, राम – "सामाजिक अनुसंधान", रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2007
- अग्निहोत्री, आर. –"आधुनिक भारतीय शिक्षा संस्थाएँ और समाधान", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1987